राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की वार्षिक रिपोर्ट 2022

संदर्भ: NCRB ने भारत में अपराधों पर अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी की है।

1. **अवलोकन:**
   - एनसीआरबी की 2022 की वार्षिक रिपोर्ट, जो 3 दिसंबर को जारी की गई, पूरे भारत में किए गए अपराध आंकड़ों का एक व्यापक संकलन है।
   - केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत यह रिपोर्ट महिलाओं के खिलाफ अपराध और आर्थिक अपराधों सहित विभिन्न श्रेणियों को शामिल करते हुए अपराध प्रवृत्तियों का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।
2. **डेटा संकलन प्रक्रिया:**
   - जनवरी 1986 में स्थापित एनसीआरबी, अपराध डेटा और फिंगरप्रिंट रिकॉर्ड के लिए एक राष्ट्रीय भंडार के रूप में कार्य करता है।
   - अपनी प्रमुख अपराध रिपोर्ट में भारत में अपराध के आंकड़े 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस बलों से प्राप्त होते हैं, साथ ही 53 शहरों के अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो से भी डेटा प्राप्त होता है।
3. **मुख्य निष्कर्ष - 2022 रिपोर्ट:**
   - रिपोर्ट में कुल 58,24,946 संज्ञेय अपराध दर्ज किए गए हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 4.5% की गिरावट दर्शाता है।
   - प्रति लाख जनसंख्या पर अपराध दर 2021 में 445.9 से घटकर 2022 में 422.2 हो गई।
   - महिलाओं के खिलाफ अपराध में 4% की वृद्धि हुई, जिनमें से अधिकांश 'पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता' से जुड़े हैं।
4. **साइबर अपराध:**
   - विशेष रूप से, रिपोर्ट किए गए साइबर अपराधों में 24.4% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 65,893 मामलों तक पहुंच गई।
   - पंजीकृत मामलों में से लगभग 64.8% मामले धोखाधड़ी के थे, इसके बाद जबरन वसूली और यौन शोषण का मामला था।
5. **आत्महत्याएँ:**
   - रिपोर्ट में पिछले वर्ष की तुलना में 2022 में रिपोर्ट की गई आत्महत्याओं में 4.2% की वृद्धि (1,70,924 आत्महत्याएं) पर प्रकाश डाला गया है।
   - प्रमुख कारणों में 'पारिवारिक समस्याएँ (विवाह संबंधी समस्याओं के अलावा),' 'विवाह संबंधी समस्याएँ,' और 'बीमारी' शामिल हैं।
6. **राज्यवार रुझान:**
   - आईपीसी अपराधों के तहत सबसे अधिक अभियोग दर वाले राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों में केरल (96.0%), पुडुचेरी (91.3%) और पश्चिम बंगाल (90.6%) शामिल हैं।
7. **सीमाएँ और व्याख्या:**
   - डेटा पंजीकृत अपराध घटनाओं को रिकॉर्ड करता है, न कि अपराध की वास्तविक घटना को
   - 'प्रिंसिपल ऑफेंस रूल' के कारण अंडरकाउंटिंग हो सकती है, और स्थानीय स्तर पर डेटा अंतराल सटीकता को प्रभावित करते हैं।
   - अपराधों के सामाजिक-आर्थिक कारणों को शामिल नहीं किया जाता है, और कुछ समूह मामलों को दर्ज करने में संकोच कर सकते हैं।
   - स्थानीय स्तर पर पुलिस अधिकारियों की कमी या रिक्तियों के कारण सटीक डेटा संग्रह में बाधा आ सकती है।
8. **राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी):**
   - राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की स्थापना 1986 में गृह मंत्रालय के तहत की गई थी।
   - इसका निर्माण राष्ट्रीय पुलिस आयोग (1977-1981) और गृह मंत्रालय की टास्क फोर्स (1985) की सिफारिशों पर आधारित था।
   - **कार्य:**
     - एनसीआरबी यौन अपराधियों का राष्ट्रीय डेटाबेस (एनडीएसओ) बनाए रखता है और इसे नियमित रूप से राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के साथ साझा करता है।
     - यह 'ऑनलाइन साइबर-अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल' के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है, जो नागरिकों को बाल अश्लीलता या बलात्कार जैसे अपराधों से संबंधित शिकायत दर्ज करने या सबूत अपलोड करने की अनुमति देता है।
     - NCRB इंटर-ऑपरेबल क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम (ICJS) को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
     - आईसीजेएस पुलिस, फोरेंसिक लैब, अदालतों, लोक अभियोजकों और जेलों के लिए आईटी सिस्टम को एकीकृत करता है।
     - सरकार का लक्ष्य 2026 तक ICJS के दूसरे चरण को पूरा करने का है, जिसमें लगभग रु. 3,500 करोड़. रुपये का प्रावधान है।
   - **एनसीआरबी द्वारा प्रमुख प्रकाशन:**
     - भारत में अपराध रिपोर्ट।
     - आकस्मिक मृत्युएँ और आत्महत्याएँ सम्बन्धी रिपोर्ट।
     - जेल सांख्यिकी।
     - भारत में गुमशुदा महिलाओं और बच्चों पर रिपोर्ट।

तटीय कटाव

संदर्भ: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में तटीय कटाव का उल्लेख किया।

तटीय कटाव की परिभाषा:

- तटीय क्षरण में लहरों, धाराओं, ज्वार, पवन-चालित जल और विभिन्न तूफानी प्रभावों के कारण समुद्र तट के साथ भूमि का दीर्घकालिक विस्थापन शामिल है।

संरचना और प्रभाव:

- गैर-चट्टानी तटों पर अपरदन विशिष्ट चट्टान संरचनाओं का निर्माण करता है, जिनमें सुरंग, पुल और स्तंभ आदि शामिल हैं।
- यहाँ अंतर-क्षरण भी होता है, जिसमें नरम क्षेत्र कठोर क्षेत्रों की तुलना में तेजी से कटाव करते हैं।
- हवा से उड़ने वाली रेत एक सैंडब्लास्टिंग प्रभाव उत्पन्न करती है, जो तटीय कटाव प्रक्रिया में योगदान देती है और चट्टानों को नया आकार देती है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

- जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के स्तर में वृद्धि का अनुमान है, जो वैश्विक स्तर पर तटीय क्षरण को काफी बढ़ा देगा और तटों और निचले तटीय क्षेत्रों में पर्याप्त परिवर्तन करेगा।

तटीय प्रक्रियाएँ:

- **हाइड्रोलिक क्रियाएं:** लहरें चट्टान की दरारों में हवा को संपीड़ित करती हैं, जिससे चट्टान के टुकड़े टूट जाते हैं और हट जाते हैं।
- **घर्षण:** जब विभिन्न कारणों से चट्टान का मलबा एक-दूसरे से टकराता है और टूटता है, जिसके परिणामस्वरूप छोटी, चिकनी चट्टानें बनती हैं।
- **अपक्षयण:** समुद्री जल में अम्ल कुछ प्रकार की चट्टानों जैसे चाक या चूना पत्थर को घोल देते हैं।
- **क्षरण:** समुद्री लहरें चट्टानों को तोड़ देती हैं या समय के साथ धीरे-धीरे उन्हें नष्ट कर देती हैं।
- **संक्षारण:** समुद्र की पीएच सांद्रता चट्टानों को संक्षारित करता है, विशेष रूप से यह चूना पत्थर की चट्टानों को प्रभावित करता है।

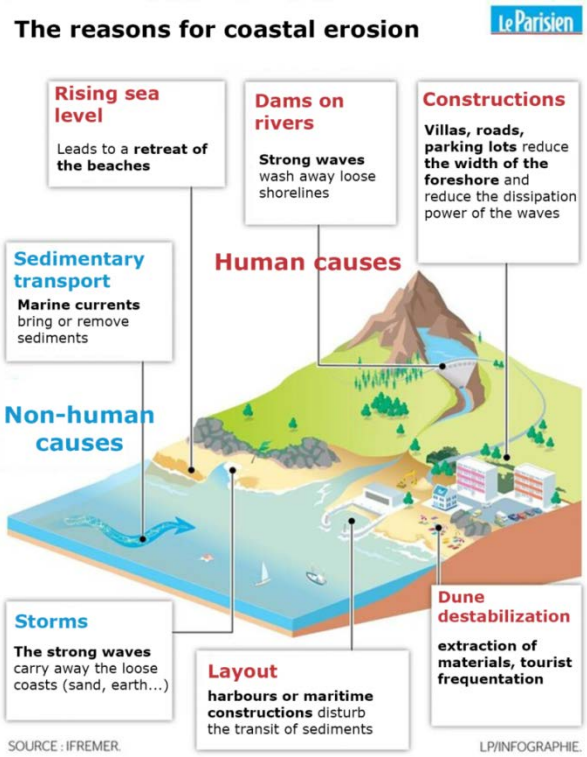

तटीय कटाव को प्रभावित करने वाले कारक:

- **प्राथमिक कारक:**
  - समुद्र की तटीय चट्टानों की कठोरता (क्षरणशीलता); चट्टान की ताकत, दरारें, फ्रैक्चर और गैर-संबद्ध सामग्रियों की उपस्थिति से प्रभावित होती है।
  - तट से मलबा हटाने की दर समुद्र तट को पार करने वाली लहरों की शक्ति पर निर्भर करती है।
  - समुद्र तट की स्थिरता और इसके निचले स्तर पर प्रतिरोध, जो समय के साथ अग्रभाग को चौड़ा करता है, तरंग ऊर्जा को नष्ट करता है।
  - समुद्र तल का विन्यास तट पर आने वाली तरंग ऊर्जा को प्रभावित करता है, जिससे तटीय कटाव प्रभावित होते हैं।
- **समुद्र के बढ़ते स्तर का प्रभाव:**
  - वैश्विक स्तर पर समुद्र के बढ़ते स्तर के कारण तटीय कटाव बढ़ गया है, जो विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी समुद्री तट पर दृष्टिगोचर है।
  - फ्लोरिडा जैसे स्थानों में भी तीव्र कटाव का अनुभव हुआ है, जिससे पर्यटन उद्योग को बनाए रखने और रेत पुनःपूर्ति के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

माध्यमिक और तृतीयक कारक:

- **द्वितीयक कारक:**
  - अपक्षय और परिवहन ढलान प्रक्रियाएं, वनस्पति क्षरण, चट्टान तल का क्षरण, तलछट संचय, चट्टान तल तलछट का प्रतिरोध, मानव गतिविधियां आदि।
- **तृतीयक कारक:**
  - समुद्री संसाधन का निष्कर्षण, तटीय प्रबंधन आदि।

भारत में तटीय कटाव

- राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (एनसीसीआर) 1990 से 2018 तक मल्टी-स्पेक्ट्रल उपग्रह छवियों और क्षेत्र-सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करके संपूर्ण भारतीय समुद्र तट पर तटरेखा परिवर्तनों की निगरानी करता है।
- स्रोतों से प्राप्त निष्कर्षों से क्षरण के प्रति 33.6% संवेदनशीलता, 26.9% वृद्धि (अभिवृद्धि), और 39.6% स्थिरता का पता चलता है।
- एनसीसीआर की मानचित्रण प्रणाली में 1:25000 पैमाने पर मुख्य भूमि तट के लिए 526 मानचित्र, 69 जिला मानचित्र और 9 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों के मानचित्र शामिल हैं।
- जुलाई 2018 में जारी "भारतीय तट के साथ तटरेखा परिवर्तन का राष्ट्रीय आकलन" रिपोर्ट, कमजोर क्षेत्रों की पहचान करती है और सुरक्षात्मक उपायों का मार्गदर्शन करती है।
- 25 मार्च, 2022 को जारी एक अद्यतन एटलस और डिजिटल रिपोर्ट, व्यापक जानकारी प्रदान करती है।
- प्राकृतिक कारणों और मानवीय गतिविधियों के कारण तटरेखा में परिवर्तन होता है, जिससे भूमि, आवास और मछुआरों की आजीविका का नुकसान होता है।
- घटती तटरेखा मछुआरों के दैनिक कार्यों को प्रभावित करती है, जिससे नावों को पार्क करने, जाल सुधारने और मछली पकड़ने की गतिविधियों के संचालन के लिए जगह प्रभावित होती है।
- अध्ययन कटाव से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए तटरेखा सुरक्षा उपायों को लागू करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

तटीय कटाव से निपटने के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास:

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत के पूरे तट के लिए खतरा रेखा को रेखांकित करता है, जो जलवायु परिवर्तन के कारण तटरेखा में बदलाव और समुद्र के स्तर में वृद्धि को दर्शाता है। यह आपदा प्रबंधन के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है और इसे तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजनाओं में शामिल किया गया है।
- MoEFCC द्वारा तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना, 2019 का उद्देश्य तटीय हिस्सों, समुद्री क्षेत्रों का संरक्षण करना और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह कटाव नियंत्रण उपायों की अनुमति देता है और अतिक्रमण और कटाव को रोकने के लिए विभिन्न तटीय क्षेत्रों के लिए नो डेवलपमेंट जोन (एनडीजेड) स्थापित करता है।
- एनजीटी के प्रत्युत्तर में, तटीय राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों से तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजनाओं को अंतिम रूप देने का अनुरोध किया गया है, जिसमें कटाव-प्रवण क्षेत्रों का मानचित्रण और तट रेखा प्रबंधन योजनाएं तैयार करना शामिल है।
- MoEFCC तटीय सुरक्षा के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करता है और सभी तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को दिशानिर्देश प्रदान करता है।
- जल शक्ति मंत्रालय की बाढ़ प्रबंधन योजना, जिसमें समुद्री कटाव रोधी परियोजनाएं भी शामिल हैं, तकनीकी, सलाहकार, उत्प्रेरक और प्रचार पहलुओं में केंद्र सरकार की सहायता से राज्य सरकारों द्वारा क्रियान्वित की जाती है।

- कमजोर हिस्सों में तटीय सुरक्षा संरचनाओं की योजना बनाने, डिजाइन करने और बनाए रखने के लिए तट के निकट तटीय डेटा एकत्र करने के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना योजना के तहत एक "तटीय प्रबंधन सूचना प्रणाली (सीएमआईएस)" शुरू की गई है।
- पुडुचेरी और चेल्लानम, केरल में तटीय कटाव शमन उपाय लागू किए गए हैं, तटीय क्षेत्रों को संरक्षित किया गया है। सुरक्षा उपायों को डिजाइन करने और तटरेखा प्रबंधन योजनाएं तैयार करने के लिए तटीय राज्यों को तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

जलवायु क्लब

हाल ही में, COP28 शिखर सम्मेलन के दौरान क्लाइमेट क्लब लॉन्च किया गया है और इसका नेतृत्व जर्मनी और चिली ने किया है।

क्लाइमेट क्लब के बारे में:

- क्लाइमेट क्लब एक अंतरसरकारी मंच है जिसका उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन को कम करना है।
- जलवायु क्लब की अवधारणा 2015 में येल अर्थशास्त्री विलियम नॉर्डहॉस द्वारा विकसित की गई थी
- इसे पहली बार जर्मनी द्वारा 2022 में G7 शिखर बैठक के दौरान प्रस्तावित किया गया था।
- G7 विकसित देशों का एक समूह है जो हर साल वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होता है, इसमें अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली और जापान शामिल हैं।
- क्लाइमेट क्लब 36 देशों का समूह है जिसमें भारत शामिल नहीं है।

माउंट मेरापी

हाल ही में, इंडोनेशिया में माउंट मारापी ज्वालामुखी में भयंकर विस्फोट हुआ, जिसके दुखद परिणाम सामने आए।

माउंट मेरापी के बारे में:

- माउंट मेरापी इंडोनेशिया में एक शंक्वाकार ज्वालामुखी है।
- यह मध्य जावा और योग्यकार्ता प्रांतों (Yogyakarta provinces) की सीमा पर स्थित है।
- ज्वालामुखी को जावानीस (Javanese) भाषा में "आग का पर्वत" भी कहा जाता है।
- यह इंडोनेशिया का सबसे सक्रिय ज्वालामुखी है और इसमें 1548 से नियमित रूप से उद्गार होता रहा है।
- इंडोनेशिया पैसिफिक रिंग ऑफ फायर पर स्थित है, जो प्रशांत महासागर के साथ एक मार्ग है जहां अक्सर भूकंप आते रहते हैं और ज्वालामुखी होते रहते हैं।
- रिंग ऑफ फायर प्रशांत महासागर के चारों ओर एक घोड़े की नाल के आकार का क्षेत्र है जो अपनी उच्च भूकंपीय और ज्वालामुखी गतिविधि के लिए जाना जाता है।
- इसे सर्कम-प्रशांत बेल्ट या सर्कम-प्रशांत भूकंपीय बेल्ट भी कहा जाता है।
- रिंग ऑफ फायर समुद्री और महाद्वीपीय प्लेटों के दबने (सबडक्शन) के कारण होता है।
- विवर्तनिक सबडक्शन एक बहुत धीमी प्रक्रिया है, जो प्रति वर्ष केवल एक या दो इंच चलती है। रिंग ऑफ फायर में स्थित कुछ महत्वपूर्ण स्थानों में बोलीविया, चिली, इक्वाडोर, पेरू, कोस्टा रिका, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और रूस शामिल हैं।

पिलाटस पीसी-7 एमके II

हाल ही में, भारतीय वायु सेना (IAF) के दो पायलटों की मौत हो गई जब उनका पिलाटस PC-7 Mk II ट्रेनर विमान तेलंगाना के डूंडीगल में वायु सेना अकादमी से एक नियमित प्रशिक्षण उड़ान के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

पिलाटस पीसी-7 एमके II (Pilatus PC-7 MK II) के बारे में:

- पिलाटस PC-7 Mk II एक एकल इंजन वाला विमान है जिसका उपयोग भारतीय वायु सेना (IAF) द्वारा बुनियादी प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।
- यह एक लो-विंग, टेंडेम-सीट प्रशिक्षण विमान है जिसे पिलाटस एयरक्राफ्ट द्वारा स्विट्जरलैंड में डिजाइन और निर्मित किया गया है।
- PC-7 Mk II 1992 से सेवा में है।
- PC-7 को पिलाटस P-3 से विकसित किया गया था।
- पिलाटस पीसी-7 एमके II की लंबाई 10.8 मीटर, पंखों का फैलाव 10.19 मीटर, ऊंचाई 3.26 मीटर, अधिकतम गति 412 किमी/घंटा है और इसकी ऊंचाई 10,000 मीटर से थोड़ी अधिक है।
- वर्तमान में, भारतीय वायुसेना की सेवा में 75 पिलाटस PC-7 Mk II विमान हैं।

ठोस-ईंधन रॉकेट

हाल ही में, दक्षिण कोरिया ने जेजू द्वीप के पास ठोस-ईंधन चालित रॉकेट का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया।

ठोस-ईंधन रॉकेट के बारे में:

- ठोस ईंधन रॉकेट एक ऐसा रॉकेट है जो ठोस प्रणोदक का उपयोग करता है।
- प्रणोदक ईंधन और ऑक्सीडाइज़र का मिश्रण है जिसे एक ठोस सिलेंडर में पैक किया जाता है।
- सिलेंडर के बीच में एक छेद होता है जो दहन कक्ष के रूप में कार्य करता है।
- इनका उपयोग हवा से हवा और हवा से जमीन पर मार करने वाली मिसाइलों, मॉडल रॉकेट और उपग्रह लांचरों में किया जाता है।
- ठोस ईंधन रॉकेट उच्च विश्वसनीयता और लंबी शेल्फ लाइफ के लिए जाने जाते हैं।
- सबसे पुराने ठोस ईंधन रॉकेट बारूद से संचालित होते थे और 13वीं शताब्दी की शुरुआत में युद्ध में उपयोग किए जाते थे।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

5 December, 2023

सफेद हाइड्रोजन

हाल ही में, वैज्ञानिकों को फ्रांसीसी-जर्मन सीमा के पास सफेद हाइड्रोजन का एक बड़ा भंडार मिला।

सफ़ेद/ श्वेत हाइड्रोजन के बारे में:

- श्वेत हाइड्रोजन भू-पर्पटी में प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली गैस है।
- इसे "प्राकृतिक," "सोना," या "भूगर्भिक" हाइड्रोजन के रूप में भी जाना जाता है।
- इसे एक संभावित स्वच्छ ऊर्जा स्रोत माना जा रहा है।
- इसे जलाने पर पानी निकलता है।
- इसे विमानन, शिपिंग और इस्पात उत्पादन जैसे उद्योगों के लिए एक आशाजनक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में देखा जाता है।
- श्वेत हाइड्रोजन जीवाश्म ईंधन से प्राप्त सबसे सस्ते हाइड्रोजन से 33% सस्ता है जबकि सबसे सस्ते हरित हाइड्रोजन से भी 2 गुना सस्ता है।
- प्राप्त भंडार में 6 मिलियन से 250 मिलियन मीट्रिक टन हाइड्रोजन हो सकता है।
- वैज्ञानिक जैक्स पिरोनोन और फिलिप डी डोनाटो ने लोरेन खनन बेसिन की उप-मिट्टी में मीथेन के स्तर का आकलन करने के लिए उत्तर-पूर्वी फ्रांस में एक मिशन शुरू किया था।
- जलवायु संकट से निपटने में सफेद हाइड्रोजन की खोज और संभावित उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है

व्हाइट लंग सिंड्रोम

हाल ही में, उत्तरी चीन और अमेरिका के ओहियो में व्हाइट लंग सिंड्रोम नाम की एक सांस की बीमारी का पता चला है, जिसने संभावित पोस्ट-कोविड-19 महामारी के खतरे जैसी चिंताएं उत्पन्न कर दी हैं।

व्हाइट लंग सिंड्रोम (White Lung Syndrome) के बारे में:

- व्हाइट लंग सिंड्रोम की पहचान प्रभावित बच्चों में छाती के एक्स-रे पर देखे गए विशिष्ट सफेद धब्बों के माध्यम से की जाती है।
- इस सिंड्रोम में विभिन्न श्वसन संबंधी बीमारियाँ शामिल हैं जैसे तीव्र श्वसन संकट सिंड्रोम (एआरडीएस), फुफ्फुसीय वायुकोशीय माइक्रोलिथियासिस (पीएएम) और सिलिका-संबंधी स्थितियाँ।
- ऐसा माना जाता है कि यह सिंड्रोम बैक्टीरिया, वायरल और पर्यावरणीय कारकों के संयोजन से उत्पन्न होता है।
- मरीजों में आमतौर पर खांसी, बुखार, नाक बहना, साइनस जमाव, सांस लेने में कठिनाई और थकान जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।
- उपचार का लक्ष्य मुख्य रूप से निमोनिया के लक्षणों को प्रबंधित करना और इष्टतम श्वसन स्वास्थ्य सुनिश्चित करना है।

समाचारों में स्थान

क्रा स्थलडमरूमध्य

"क्रा, थाईलैंड में एक अल्पज्ञात स्थलडमरूमध्य (इस्थमस) है, जिसने हाल ही में चीन की इंडो-पैसिफिक रणनीति के लिए अपनी प्रासंगिकता के कारण ध्यान आकर्षित किया है।

क्रा स्थलडमरूमध्य के बारे में:

- क्रा स्थलडमरूमध्य थाईलैंड में एक भूमि पुल है जो मलय प्रायद्वीप को शेष महाद्वीपीय दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ता है।
- यह पश्चिम में अंडमान सागर और पूर्व में थाईलैंड की खाड़ी के बीच स्थित है।
- यह मलय प्रायद्वीप को एशियाई मुख्य भूमि से जोड़ता है।
- क्रा इस्थमस को कभी-कभी "डेविल्स नेक" भी कहा जाता है क्योंकि यह थाईलैंड की खाड़ी और अंडमान सागर से आने-जाने वाले शिपिंग के लिए बाधा उत्पन्न करता है।
- क्रा नहर, जिसे थाई नहर या क्रा इस्थमस नहर के नाम से भी जाना जाता है, एक प्रस्तावित नहर परियोजना है जो थाईलैंड की खाड़ी को अंडमान सागर से जोड़ेगी।
- आर्थिक गलियारा चीन समर्थित पहल में बदल गया है जिसके दोनों छोर पर बंदरगाह हैं।

POINTS TO PONDER

- कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन (सीएसी), जो हाल ही में खबरों में था, किन दो संगठनों द्वारा स्थापित किया गया था? **- डब्ल्यूएचओ और एफएओ**
- विश्व एड्स दिवस 2023 का विषय क्या था? **- समुदायों को नेतृत्व करने दें**
- व्हाइट लंग सिंड्रोम का प्रेरक एजेंट क्या है जो हाल ही में ख़बरों में था? **- बैक्टीरिया**
- ऑनलाइन में उपयोग किए जाने वाले झूठे अभाव के दावों (false scarcity claims), पुष्टिकरण-शर्मनाक(confirm-shaming), जबरन बंडलिंग (forced bundling) और सदस्यता जाल (subscription traps) के लिए उपयोग किया जाने वाला सामान्य शब्द क्या है; और हाल ही में भारत में प्रतिबंधित किया गया है? **- डार्क पैटर्न**
- भारतीय नौसेना द्वारा ऑपरेशन ट्राइडेंट किस वर्ष चलाया गया था? **- 1971**

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com